PAPER-III
SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECTS

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) __________________________
   (Name) ____________________________
2. (Signature) __________________________
   (Name) ____________________________

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No.________________________________

(In words)

D	7	3	1	0

Time : 2 $^1/_2$ hours] [Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **40** Number of Questions in this Booklet : **19**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।
9. किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।

संस्कृत-परम्परागत-विषय:

SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECT

प्रश्नपत्रम् – III

प्रश्नपत्र – III

PAPER – III

टिप्पणी : अस्य प्रश्नपत्रस्य **शतद्वयम्** (200) अङ्का: सन्ति एवम् अस्मिन् **चत्वारि** खण्डानि सन्ति । अभ्यर्थिभि: एषु समाहितानां प्रश्नानामुत्तरं पृथग्विहितविस्तृतनिर्देशानुसारं देयम् ।

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ** (200) अंकों का है एवं इसमें **चार** (4) खण्ड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग से दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

खण्डम् – I
खण्ड – I
SECTION – I

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे **विंशत्यङ्कात्मकौ** निबन्धश्रेणीकौ प्रश्नौ स्तः, ययोः उत्तरं प्रत्येकं प्रायः **पञ्चशतमितैः (500)** शब्दैरपेक्ष्यते । **(2 × 20 = 40 अङ्काः)**

नोट : इस खंड में **बीस-बीस (20)** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

Note : This section consists of **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

1. संस्कृतभाषया कमप्येकं विषयमाश्रित्य निबन्धो लेखनीयः

(क) प्राचीनभारतीयविज्ञानम् ।

(ख) मानवपूरोगतिः ।

(ग) राष्ट्रियैक्यभावना ।

2. संस्कृतभाषया कमप्येकं विषयमाश्रित्य निबन्धो लेखनीय:

(क) लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु ।

(ख) आर्जवं कुटिलेषु न नीति: ।

(ग) विद्ययाऽमृतमश्नुते ।

खण्डम् – II
खण्ड – II
SECTION – II

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे प्रत्येकम् ऐच्छिकवर्ग: / विशेषज्ञता-अनुसारं **त्रय:** (3) प्रश्ना: सन्ति । अभ्यर्थिना केवलमेकमेव ऐच्छिकवर्गं / विशेषज्ञताम् आश्रित्य तस्मादेव त्रय: प्रश्ना: समाधेया: । प्रत्येकं प्रश्न: **पञ्चदशाङ्कात्मक:** (15) अस्ति । तदुत्तरं प्राय: **शतत्रयशब्दै:** (300) अपेक्ष्यते । **(3 × 15 = 45 अङ्का:)**

नोट : इस खण्ड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता से **तीन** (3) प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता को चुनकर उसी के तीनों प्रश्नों के उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह** (15) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ** (300) शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

Note : This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only one elective/specialization and answer all the three questions from it. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words. **(3 × 15 = 45 marks)**

I. फलितज्योतिषम् ।

3. कावपि द्वावरिष्टयोगौ विलिख्य व्याख्येयौ ।

किन्हीं दो अरिष्ट योगों को लिखकर व्याख्या कीजिए ।

Mention any two अरिष्टयोगs and explain them.

4. अष्टकूटानां नामानि विलिख्य सपरिहार: भकूटदोष: संवर्णनीय: ।

अष्टकूटों का नाम लिखकर परिहार करते हुए भकूटदोष का वर्णन करें ।

Write the names of अष्टकूट and discuss भकूटदोष along with the means for avoiding it.

5. यूपेषुशक्तदण्डाख्य: योग: संवर्णनीय: ।

यूपेषुशक्तदण्डाख्य योगों का वर्णन कीजिए ।

Clearly describe the योग called यूपेषुशक्तदण्ड.

II. सिद्धान्तज्योतिषम् ।

3. सूक्ष्मदिग्साधनं वासनयाऽलंक्रियताम् ।

सूक्ष्मदिग्साधन को वासना से अलंकृत कीजिए ।

Explain सूक्ष्मदिग्साधन with the help of वासना.

4. ग्रहस्पष्टीकरणविधि: संवर्णनीय: ।

ग्रह स्पष्ट करने की विधि का सम्यक् वर्णन कीजिए ।

Give a clear exposition of ग्रहस्पष्टीकरणविधि.

5. चन्द्रग्रहणापेक्षया सूर्यग्रहणस्य वैशिष्ट्यं संवर्ण्यताम् ।

चन्द्रग्रहण की अपेक्षा सूर्यग्रहण की विशेषता का वर्णन कीजिए ।

Describe the special features of solar eclipse in relation to lunar eclipse.

III. व्याकरणम् ।

3. स्फोटस्वीकारे युक्तिमुल्लिख्य तत्स्वरूपं व्याख्यायताम् ।

स्फोट के स्वीकार करने में युक्ति का उल्लेख कर उसके स्वरूप की व्याख्या कीजिए ।

Mention the argument for admitting स्फोट and explain its nature.

4. व्याकरणस्य मुख्यप्रयोजनानि कानि ? तेषु द्वयो: विशदी व्याख्या कार्या ।

व्याकरण के मुख्य प्रयोजन कौन से हैं ? उनमें किन्हीं दो की विशद व्याख्या कीजिए ।

What are the primary purposes of grammar ? Explain in detail any two of them.

5. अधोलिखितानि ससूत्रं साधनीयानि ।

अधोलिखितों का सूत्र सहित साधन कीजिए ।

Explain the formation of the following with rules :

मतिमान्, वैयासकि:, राजन्वती ।

IV. मीमांसा ।

3. चातुर्मास्यश्रौतयागं संक्षेपेण प्रतिपादयत ।

चातुर्मास्य श्रौतयाग का संक्षेप में प्रतिपादन कीजिए ।

Describe briefly चातुर्मास्य श्रौतयाग.

4. अर्थवादं सोपपत्तिकं विवेचयत ।

अर्थवाद का उपपत्ति सहित विचार कीजिए ।

Explain अर्थवाद with illustrations.

5. मीमांसानुसारं विधिं निरूपयत ।

मीमांसा के अनुसार विधि का निरूपण कीजिए ।

Explain विधि according to मीमांसा.

V. नव्यन्याय: ।

3. समवायस्यास्तित्वे किं प्रमाणम् ? किं वा तस्य लक्षणम् ? आलोच्यताम् ।

समवाय के अस्तित्व का क्या प्रमाण है ? अथवा उसका क्या लक्षण है ? आलोचना कीजिए ।

What is the proof for the existence of समवाय ? What is its definition ? Discuss.

4. जातिबाधकानां सोदाहरणं विवरणं प्रदेयम् ।

जातिबाधकों का उदाहरण सहित विवरण दीजिए ।

Give an account of जातिबाधकs with examples.

5. नव्यन्यायानुसारं शक्तिस्वरूपं व्याख्यायताम् ।

नव्यन्याय के अनुसार शक्तिस्वरूप की व्याख्या कीजिए ।

Explain the nature of शक्ति according to Navyanyaya.

VI. सांख्ययोगौ ।

3. सांख्याभिमतान् गुणान् विवृणुत ।

सांख्याभिमत गुणों का विवरण कीजिए ।

Explain गुणा: according to Sāṅkhya.

4. योगदर्शनानुसारेण संप्रज्ञातसमाधिं विवृणुत ।

योगदर्शन के अनुसार संप्रज्ञातसमाधि का विवरण कीजिए ।

Explain संप्रज्ञातसमाधि: according to Yogadarśana.

5. योगलब्धा: सिद्धी: विशदयत ।

योगलब्ध सिद्धियों का विवरण कीजिए ।

Elucidate the सिद्धि: obtained by Yoga.

VII. तुलनात्मकं दर्शनम् ।

3. प्रमाणानां विषये नैयायिकानां मतं स्पष्टयत ।

प्रमाणों के विषय में नैयायिकों का मत स्पष्ट कीजिए ।

Explain the epistemological position of नैयायिकs.

4. परिणाम-विवर्तवादयो: स्वरूपस्वभावान् विशदयत ।

परिणाम और विवर्तवाद के स्वरूपस्व भावों को सविशद लिखें ।

Elucidate the nature of परिणामवाद and विवर्तवाद.

5. भारतीयदर्शनेषु नास्तिकमतानां प्रधानतत्वानि विवृणुत ।

भारतीय दर्शनों में नास्तिक मतों के प्रधान तत्त्वों का विवरण करें ।

Bring out the basic tenets of the heterodox Schools of Indian Philosophy.

VIII. शुक्लयजुर्वेद: ।

3. वेदस्यापौरुषेयत्वं साधयत ।

वेद अपौरुषेय है – साधन कीजिए ।

Establish that Veda is अपौरुषेय.

4. पारस्करोक्तदिशा विवाहविधिं प्रतिपादयत ।

पारस्करगृह्यसूत्रानुसार विवाहविधि का प्रतिपादन कीजिए ।

Explain the rules of marriage according to पारस्कर.

5. वैदिकदेवतानां वैशिष्ट्यं प्रतिपादयत ।

वैदिक देवताओं की वैशिष्ट्य प्रतिपादन कीजिए ।

Describe the characteristics of vedic देवताs.

IX. माध्ववेदान्त: ।

3. जीवब्रह्मणोर्भेदं द्वैतदिशा विशदयत ।

जीव और ब्रह्म के भेद को द्वैतमतानुसार विशद कीजिए ।

Elucidate the difference between Jīva and Brahman according to Dvaita.

4. अहं ब्रह्मास्मीति महावाक्यं माध्वदिशा विमृशत ।

अहं ब्रह्मस्मि – इस महावाक्य का माध्वमतानुसार विमर्शन कीजिए ।

Explain अहं ब्रह्मास्मि महावाक्यं according to Madhvites.

5. अनिर्वचनीयख्यातिं द्वैतदिशा विचारयत ।

अनिर्वचनीयख्याति का द्वैतमतानुसार विचार कीजिए ।

Discuss अनिर्वचनीयख्याति according to Dvaita. .

X. धर्मशास्त्रम् ।

3. पुत्र भेदान् विलिख्य दत्तपुत्रग्रहणकालं निरूपयत ।

पुत्रों के भेद लिखकर दत्तपुत्रग्रहणकाल का निरूपण कीजिए ।

Mention the types of पुत्र and determine the time suitable for taking a दत्तपुत्र.

4. सुरापानप्रायश्चित्तं यथाशास्त्रं लिखत ।

सुरापानप्रायश्चित्त शास्त्र के आधार पर लिखिए ।

Write on प्रायश्चित्त to be performed due to सुरापान according to शास्त्र.

5. सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते – इत्युक्ते यथार्थतां विवेचयत ।

सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते – इस उक्ति का यथार्थता विचार कीजिए ।

Discuss सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते.

XI. साहित्यम् ।

3. काव्यभेदान् विवृणुत ।

काव्यभेदों का विवरण कीजिए ।

Explain the 'काव्यभेद's.

4. रसस्वरूपं विचारयत ।

रसस्वरूप का विचार कीजिए ।

Discuss the nature of Rasa.

5. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' – व्याख्यात ।

'रीतिरात्मा काव्यस्य' – व्याख्या कीजिए ।

'रीतिरात्मा काव्यस्य' – Comment.

XII. पुराणेतिहासौ ।

3. गृहस्थाश्रम धर्मान् विचारयत ।

गृहस्थाश्रम के धर्मों का विचार कीजिए ।

Examine the 'गृहस्थाश्रमधर्म's.

4. महाभारतकालीनां सामाजिकीं स्थितिं विवृणुत ।

महाभारतकालीन सामाजिक स्थिति का वर्णन कीजिए ।

Describe the social conditions as found in the Mahabharata.

5. कृष्णावतारस्य महत्त्वमुद्घाटयत ।

कृष्णावतार के महत्त्व को उद्‌घाटित कीजिए ।

Bring out the importance of कृष्णावतार.

XIII. आगमः ।

3. आगमप्रतिपादितानि षट्त्रिंशत्तत्त्वानि परिचयं कुरुत ।

आगम प्रतिपादित 36 तत्त्वों का परिचय दीजिए ।

Introduce the 36 principles proposed in the आगमs.

4. पाशुपतमतस्य प्रधानतत्त्वानि निरूपणीयानि ।

पाशुपतमत के प्रधान तत्त्वों का निरूपण कीजिए ।

Bring out the basic tenets of पाशुपतमत.

5. आगमेषु दीक्षाया: स्वरूपं प्राशस्त्यं च विशदयत ।

आगम में दीक्षा के स्वरूप और प्रासस्त्य का सविशद विवेचन करें ।

Explain the nature and the importance of दीक्षा in the आगमs.

XIV. अद्वैतवेदान्त: ।

3. अविद्यां विवृणुत अद्वैतवेदान्तदिशा ।

अद्वैतवेदान्त के अनुसार अविद्या का विवरण कीजिए।

Explain अविद्या according to Advaitavedānta.

4. पञ्चविद्या: का: ? अद्वैतवेदान्तदिशा विशदयत ।

पाँच विद्यायें कौन हैं ? अद्वैतवेदान्तानुसार विशद कीजिए ।

Which are the five विद्या: ? Explain in accordance with Advaitavedānta.

5. अन्यथाख्यातिवादं विवृणुत ।

अन्यथाख्यातिवाद का विवरण कीजिए ।

Explain अन्यथाख्यातिवाद.

खण्डम् – III

खण्ड – III

SECTION – III

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे **दशाङ्कात्मका:** (10) **नव** (9) प्रश्ना: सन्ति । प्रत्येकं प्रश्नस्य उत्तरं प्राय: **पञ्चाशत्** (50) शब्दैरपेक्ष्यते । **(9 × 10 = 90 अङ्का:)**

नोट : इस खंड में **दस-दस** (10-10) अंकों के **नौ** (9) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास** (50) शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 marks)**

6. उपनयनविवाहमुहूर्तयो: गुरुशुद्धिविचार: प्रस्तूयताम् ।

   उपनयन एवं विवाहमुहूर्त में गुरुशुद्धि का विचार प्रस्तुत कीजिए ।

   Make an examination of गुरुशुद्धि at the time of उपनयन and marriage.

7. ग्रहाणां कक्षाक्रमं संवर्ण्य वारक्रमनिरूपणं विधीयताम् ।

ग्रहों का कक्षाक्रम वर्णन करके वारक्रम निरूपित कीजिए ।

Determine वारक्रम after giving a description of the कक्षाक्रम of the ग्रहs.

8. आधारभेदा: सोदाहरणं व्याख्येया: ।

आधारभेदों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए ।

Explain the types of आधार with examples.

9. ब्राह्मणादिवर्णानां मरणाशौचं निरूपयत ।

ब्राह्मणादि वर्णों का मरणाशौच निरूपण कीजिए ।

Determine मरणाशौच in the case of वर्णs like Brāhmaṇa etc.

10. हेत्वाभासा: के ?

हेत्वाभास कौन-कौन हैं ?

What are the हेत्वाभासा: ?

11. राजधर्मान् संक्षेपेण प्रतिपादयत ।

संक्षेप में राजधर्मों का प्रतिपादन कीजिए ।

Explain briefly राजधर्मs.

12. ब्राह्मणग्रन्थस्य परिचयप्रदानं कुरुत ।

ब्राह्मणग्रन्थ का परिचय प्रदान कीजिए ।

Give an account of Brāhmaṇa literature.

13. महाभारते अङ्गिरसं विचारयत ।

महाभारत में अङ्गिरस का विचार कीजिए ।

Discuss the अङ्गिरस in Mahābhārata.

14. विवर्तवादं विवृणुत ।

विवर्तवाद का विवरण कीजिए ।

Explain विवर्तवाद.

खण्डम् – IV

खण्ड – IV

SECTION – IV

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे निम्नाङ्कितानुच्छेदमाश्रित्य **पञ्च** (5) प्रश्नाः सन्ति । प्रत्येकं प्रश्नस्योत्तरं प्रायः **त्रिंशत्** (30) शब्दैरपेक्ष्यते । प्रत्येकं प्रश्नः **पञ्चाङ्कः** अस्ति । **(5 × 5 = 25 अङ्काः)**

नोट : इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच** (5) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस** (30) शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच** (5) अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

Note : This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.
(5 × 5 = 25 marks)

अस्ति कस्मिंश्चित् नगरे देवशक्तिर्नाम राजा, तस्य च पुत्रः जठराश्रयेण उरगेण प्रतिदिनं प्रत्यङ्गं क्षीयते । अनेकोपचारैः सद्वैद्यैः सच्छास्त्रोपदिष्टौषधयुक्त्याऽपि चिकित्स्यमानो न स्वास्थ्यमाप्नोति । अथ असौ राजपुत्रः निर्वेदात् देशान्तरं गत्वा कस्मिंश्चित् नगरे भिक्षाटनं कृत्वा महति देवालये कालं यापयतिस्म ।

अथ तत्र नगरे बलिर्नाम राजा आस्ते, तस्य च द्वे दुहितरौ यौवनस्थे तिष्ठतः, ते च प्रतिदिवसमादित्योदये पितुः पदान्तिकमागत्य नमस्कारं चक्रतुः । तत्र च एका अब्रवीत् – 'विजयस्व महाराज ! यस्य प्रसादात् सर्वं सुखं लभ्यते' । द्वितीया तु – 'विहितं भुङ्क्ष्व महाराज ।' इति ब्रवीति । तत् श्रुत्वा प्रकुपितो राजा अब्रवीत् – 'भोः मन्त्रिणः ! एनां दुष्टभाषिणीं कुमारिकां कस्यचित् वैदेशिकस्य प्रयच्छत, येन निजविहितम् इयमेव भुङ्क्ते' । अथ 'तथा' इति प्रतिपद्य

अल्पपरिवारा सा कुमारिका मन्त्रिभिः तस्य देवकुलाश्रितराजपुत्रस्य प्रतिपादिता । सा अपि प्रहृष्टमानसा तं पतिं देववत् प्रतिपद्य आदाय च अन्यविषयंगता ।

ततः कस्मिंश्चित् दूरतरनगरप्रदेशे तडागतटे राजपुत्रम् आवासरक्षायै निरूप्य, स्वयञ्च घृततैललवणतण्डुलादिक्रयनिमित्तं सपरिवारा गता । कृत्वा च क्रयविक्रयं यावदागच्छति, तावत् स राजपुत्रो वल्मीकोपरि कृतमूर्धा प्रसुप्तः । तस्य च मुखात् भुजगः फणां निष्क्रम्य वायुमश्नाति । तत्र एव च वल्मीकेऽपरः सर्पो निष्क्रम्य तथा एव आसीत् । अभ तयोः परस्परदर्शनेन क्रोधसंरक्तलोचनयोः मध्यात् वल्मीकस्थेन सर्पेण उक्तः – 'भो भो दुरात्मन् ! कथं सुन्दरसर्वाङ्ग राजपुत्रमित्थं कदर्थयसि ?' । मुखस्थोऽहिरब्रवीत् – भो भोः । त्वया अपि दुरात्मना अस्य वल्मीकस्य मध्ये कथमिदं दूषितं हाटकपूर्णं कलसयुगलम् ? इति । एवं तौ परस्परस्य मर्माणि उद्घाटितवन्तौ । पुनः वल्मीकस्थोऽहिरब्रवीत् – 'भो दुरात्मन् । भेषजमिदं ते किं कोऽपि न जानाति यत्, जीर्णोत्फालितकाञ्जिकराजिका पानेन भवान् विनाशमुपयाति ?' । अथ उदरस्थोऽहिरब्रवीत् – 'तवापि एतत् भेषजं कश्चिदपि न वेत्ति यत् उष्णतैलेन वा महोष्णोदकेन तव विनाशः स्यात्' – इति ।

एवञ्च सा राजकन्या विटपान्तरिता तयोः परस्परालापान् मर्ममयान् आकर्ण्य तथा एव अनुष्ठितवती, विधाय नीरोगं भर्तारं निधिञ्च परममासाद्य स्वदेशाभिमुखं प्रायात् । तत्र च पितृमातृस्वजनैः प्रतिपूजिता विहितोपभोगं प्राप्य सुखेन अवस्थिता ।

15. देवशक्तिः किमर्थं देशान्तरे कालं यापयतिस्म ?

16. ‘विहितं भुङ्क्ष्व महाराज !’ इति कया उक्तम् ? तस्य परिणाम: किम् ?

17. कथं भुजगद्वयं परस्परदर्शनपथमागतम् ?

18. उदरस्थस्य सर्पस्य मरणरहस्यं किम् ?

19. वल्मीकस्थस्य सर्पस्य मरणकारणं किम् ?

Space For Rough Work

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....